# खीरे की डंठल

## एक बंगाली लोककथा

# खीरे की डंठल

## एक बंगाली लोककथा
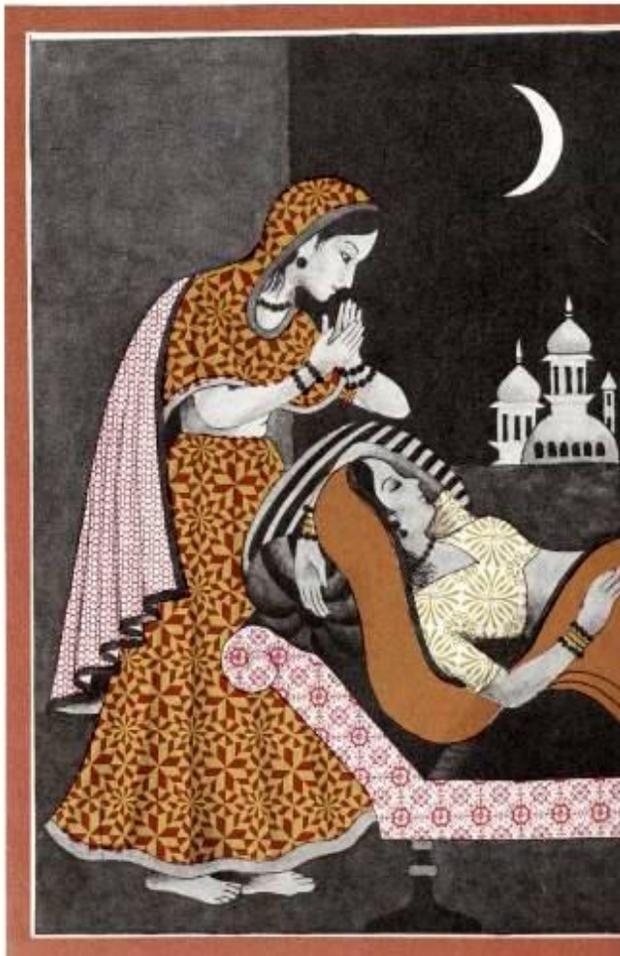
एक लकड़हारे और उसकी पत्नी
के कोई बच्चा नहीं था.
एक दिन लकड़हारे की पत्नी को
एक सपना आया.
शुस्ती – बच्चों की देवी ने आकर
उससे कहा, “एक खीरा ढूंढो.
उसे खाओ. फिर तुम्हें एक
सुन्दर बेटा पैदा होगा.”
पत्नी ने लकड़हारे को शुस्ती की
कही बात बताई.

अगले दिन जंगल में लकड़हारे को
एक बूढ़ी औरत मिली.
उसकी पीठ झुककर दोहरी थी.
वो एक लकड़ी के सहारे ठुम्मक-ठुम
करते हुए चल रही थी.
बुढ़िया ने अपने बटुए में से छोटा
खीरा निकालकर लकड़हारे को दिया
और कहा, “अपनी पत्नी से कहना कि
वो इसे बिल्कुल मेरे बताए अनुसार
खाए. वो सात दिन रुके और उसके
बाद ही पूरा खीरा खाए.
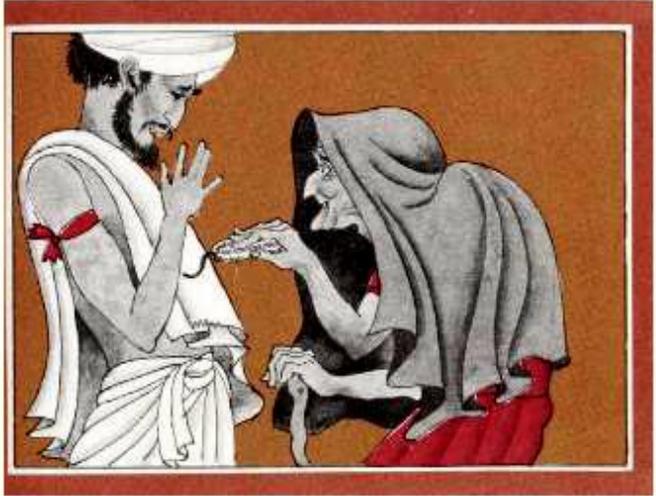
वो सात दिन रुके
और उसके बाद खीरे को
उसकी डंठल समेत खाए.”

पर वो पत्नी को यह बताना भूल गया
कि उसे डंठल समेत पूरा खीरा खाना था.
उसके बाद लकड़हारा जंगल में वापिस
चला गया.

लकड़हारा अपनी पत्नी को
यह खुशखबरी सुनाने
दौड़ा-दौड़ा घर गया.
“देखो शुस्ती देवी ने तुम्हारे
लिए क्या भेजा है.
तुम उसे अभी मत खाना.
तुम उसे अभी रख दो.
उसे सात दिन इंतज़ार करने
के बाद ही खाना.”

लकड़हारे की पत्नी से खुद से कहा,
"मैं क्यों सात दिन इंतज़ार करूं?"
उसने खीरा खा लिया और उसकी
डंठल फेंक दी.
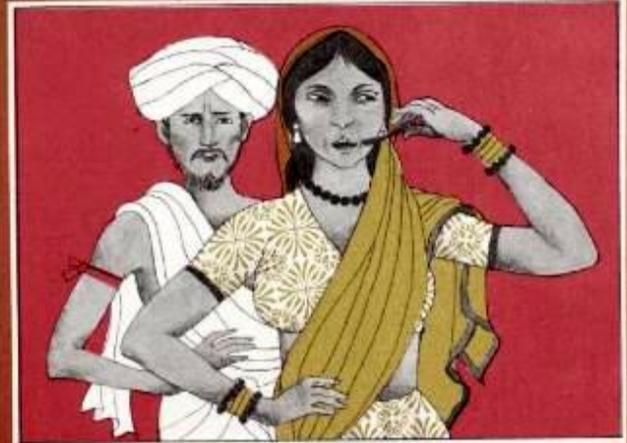
जब लकड़हारे घर वापिस आया
तो उसने डंठल को देखा.
"अरे, तुमने सात दिन इंतजार क्यों
नहीं किया," उसने पूछा.
"और तुमने पूरा खीरा भी नहीं खाया!
जाओ जल्दी से उसकी डंठल खा लो!"

फिर पत्नी ने खीरे की डंठल भी खा ली.
अट्ठारह क्षणों बाद उसकी गोद में एक
छोटा लड़का बैठा था.
लड़के की उंचाई दो उंगल की थी.
उसकी चार उंगल लम्बी एक चोटी भी थी.

जब लकड़हारे ने अपने बेटे को देखा
तो फिर वो घर से बाहर भागा.
लकड़हारे की पत्नी लड़के को देखकर
ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी.
वो डूब मरने के लिए
नदी की ओर दौड़ी.
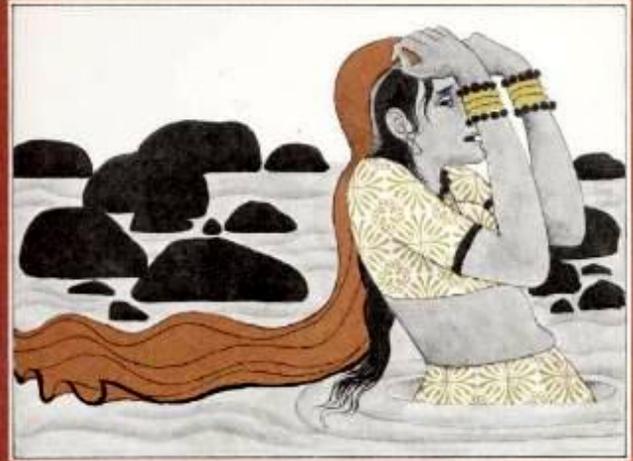
छोटी ऊँगली भी अपनी माँ के पीछे दौड़ा.
वो चिल्लाया, "माँ! वापिस लौटकर आओ!
मुझे ज़ोर की भूख लगी है!"
फिर लकड़हारे की पत्नी
नदी के बाहर निकली और उसने
अपने बेटे को दूध पिलाया.

फिर छोटी ऊँगली ने कहा,
“अब मैं अपने पिताजी को
खोजने जाऊंगा.”
वो दो-चार कदम कूदा
और फिर अचानक रुका.
उसके पिताजी वहां एक
पेड़ काट रहे थे.
“पिताजी,” उसने कहा,
“मेरे साथ अभी घर चलिए
क्योंकि माँ रो रही हैं.”

लकड़हारे ने अपने बेटे को घूरा.
फिर उसने छोटी ऊँगली को गोद में उठाया.
“अब मैं घर वापिस नहीं आ सकता,”
लकड़हारे ने कहा.
“मैंने खुद को राजा को बेंच दिया है.
अब मैं राजा का लकड़हारा हूँ.”
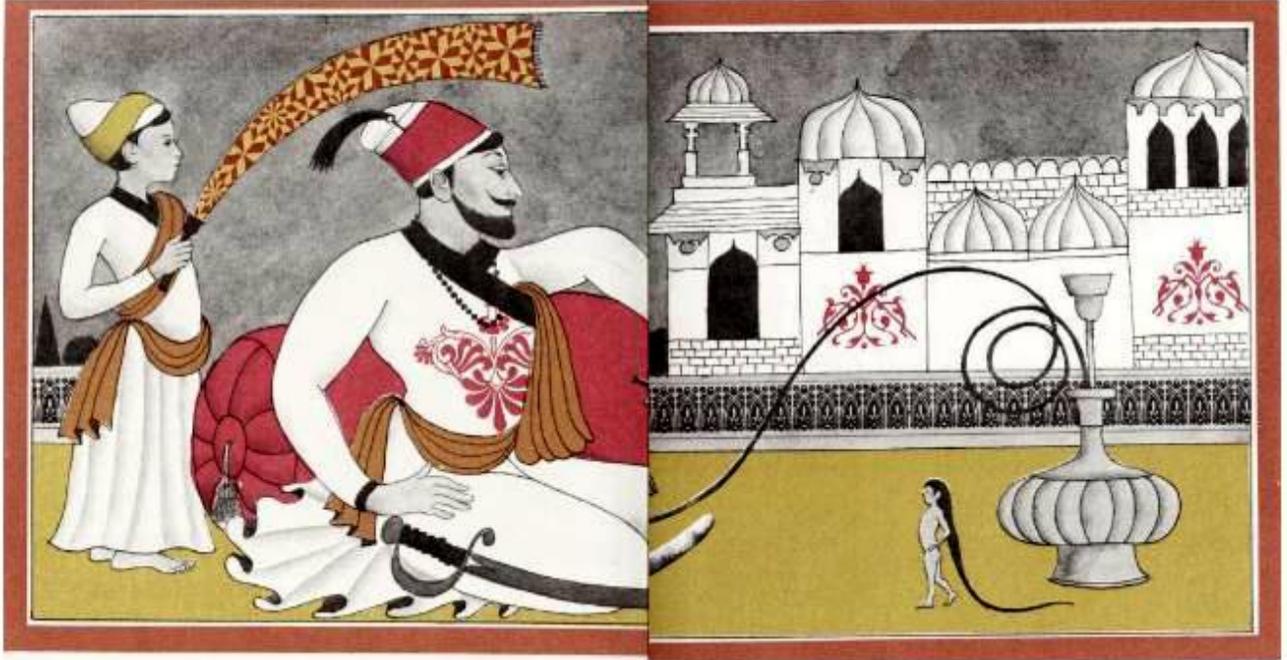
उसके बाद छोटी ऊँगली, राजा के पास गया.
“राजामोशाई,” उसने कहा.
“मैं आपके लकड़हारे को खरीदना चाहता हूँ.
उसकी मुझे क्या कीमत देनी होगी?”

“पहले तुम मुझे एक कौड़ी देना.
उसके बाद तुम मेरा एक और काम करना.
उसके बाद मैं तुम्हें लकड़हारा
वापिस कर दूंगा,” राजा ने कहा.

छोटी ऊँगली तालाब के पास बैठकर
कौड़ी कैसे मिले? उसके बारे में सोचने लगा.
तभी किसी ने उसकी चोटी खींची
और वो अपनी पीठ के बल गिरा.

एक टर्राती आवाज़ ने कहा,
"अरे छुटकू! तुम कौन हो?"
छोटी ऊँगली कूद कर खड़ा हुआ.
वो गुस्से से आगबबूला था.
"मैं जो हूँ, वो हूँ!" उसने कहा.
"तुम कौन हो?"
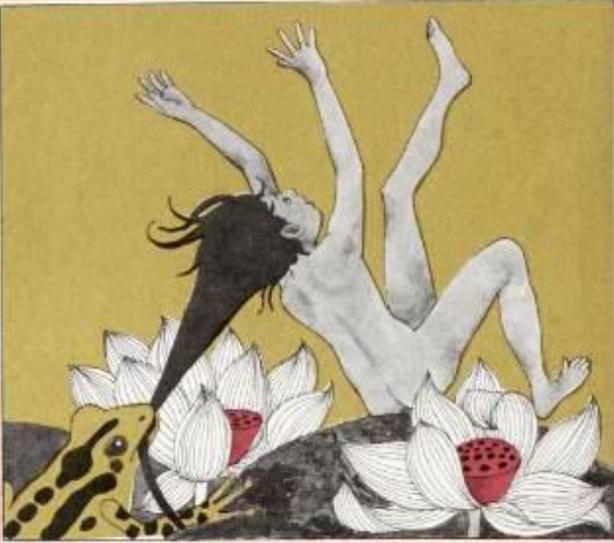
“मैं मेंढकों का राजकुमार हूँ,”
टर्राती आवाज़ ने कहा.
छोटी ऊँगली ने कहा
“मैं अभी तुरंत तुम्हारा
टर्राना बंद कर सकता हूँ.
पर उसके लिए मुझे एक कुल्हाड़ी चाहिए
जो अभी मेरे पास नहीं है.”

“यह तो बड़ी अजीब बात है!
कि हम दोनों को एक कुल्हाड़ी चाहिए!
मैंने अपने पिता की अनुमति के खिलाफ
मेंढक राजकुमारी से शादी की.
फिर पिताजी ने मेरी पत्नी को एक
लौकी की तुम्बी में बंद करके
उसे पेड़ से लटका दिया.
मैं तुम्हें एक कौड़ी दूंगा
कुल्हाड़ी खरीदने के लिए.
फिर क्या तुम पेड़ काटोगे?”

छोटी ऊँगली ने कहा,
“ज़रूर, पर पेड़ काटने के बाद
तुम्हें मुझे एक और कौड़ी देनी होगी.”
फिर दोनों के बीच सौदा पक्का हुआ.
मेंढक राजकुमार कमल के पत्ते पर
बैठकर इंतज़ार करने लगा.
छोटी ऊँगली को एक लोहार मिला
जो गरम लोहे को पीट रहा था.
लोहार तीन अंगुल ऊंचा था
और उसकी दाढ़ी चार अंगुल लम्बी थी.
छोटी ऊँगली ने लोहार को
कुल्हाड़ी के लिए एक कौड़ी दी.
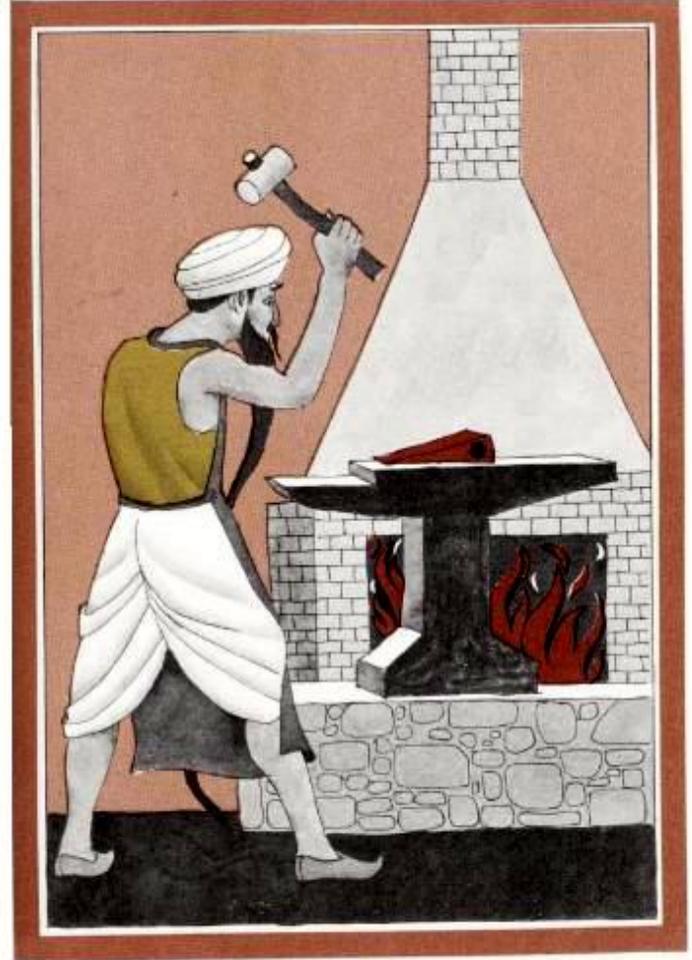
फिर छोटी ऊँगली
उस एरंड के पेड़ के पास गया
जिससे लौकी की तुम्बी लटकी थी.
उसने पेड़ काटने की कोशिश की
पर पेड़ की छाल बहुत मोटी थी.
यह देख मेंढक राजकुमार रोने लगा.

छोटी ऊँगली ने ऊपर देखा.
लौकी एक डंडी से लटकी थी
और डंडी पेड़ की टहनी से बंधी थी.
उसने कहा, "वाह!"
फिर वो आसानी से पेड़ पर चढ़ गया
और लौकी की तुम्बी तक पहुंचा.

उसने अपने चोटी को लौकी से बाँधा
फिर वो चिल्लाया, "मेंढक राजकुमारी!
तुम नीचे आओ इस रस्सी को पकड़कर!
नीचे मेंढक राजकुमार तुम्हारा बड़ी बेसब्री
से इंतज़ार कर रहा है."
फिर मेंढक राजकुमारी आसानी से
छोटी ऊँगली की चोटी पकड़कर उतरी.

साथ में डंडी और लौकी की तुम्बी भी आई.
छोटी ऊँगली ने उन्हें बड़ी सावधानी से
पेड़ से ज़मीन पर उतारा.
फिर मेंढक राजकुमार ने
छोटी ऊँगली को धन्यवाद दिया
और साथ में एक कौड़ी भी दी.

मेंढक राजकुमारी ने कहा,
"यह थूक की एक जादुई गेंद है
तुम्हें जल्द ही इसकी ज़रुरत पड़ेगी."
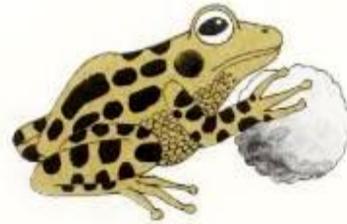
लौकी और डंडी ने कहा,
"तुम्हें हमारी भी ज़रुरत पड़ेगी.
हम भी तुम्हारे साथ चल रहे हैं."
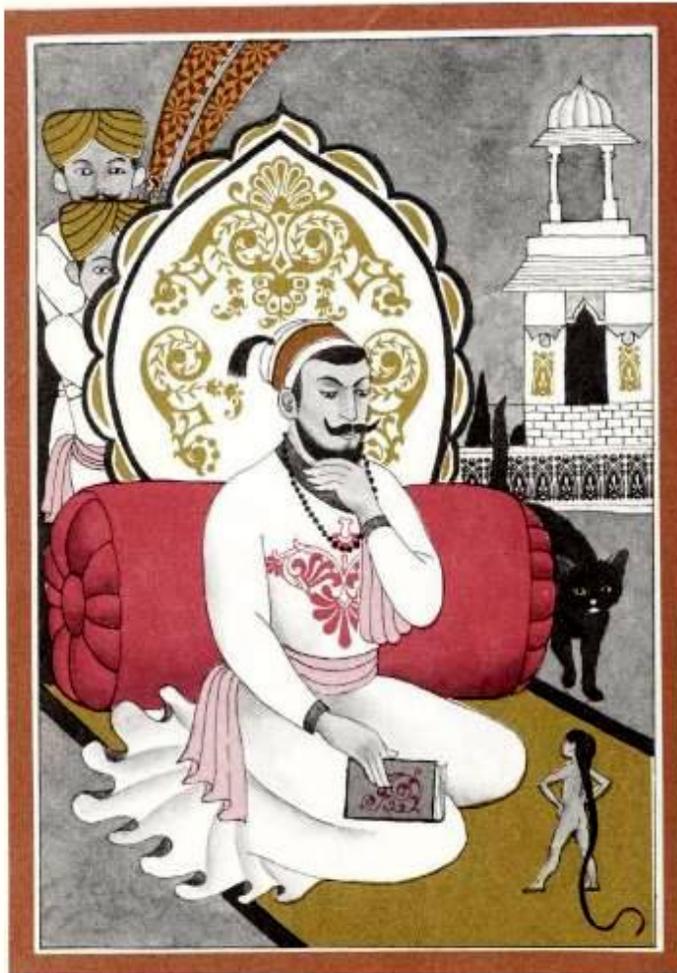
उसके बाद छोटी ऊँगली राजा
के दरबार में गया.
वो सिंहासन के पास जाकर खड़ा हुआ.
“राजामोशाई,” उसने कहा,
“यह लीजिए कौड़ी.
अब मेरे पिताजी को वापिस करिए?”
राजा ने कहा, “ठीक है. पर इससे पहले
तुम्हें मेरे लिए एक और काम करना होगा.”

नदी के उस पार
चोरों का गाँव है.
हर रात वो चोर मेरे लोगों
के घरों में चोरी करते हैं.
तुम उन चोरों के राजा
को पकड़कर लाओ.

फिर मैं उसकी शादी अपनी
आधी-अंधी बेटी से करूंगा.
फिर वो चोरों से मेरे राज्य में
चोरी करने से मना करेगा.
जब तुम यह काम पूरा करोगे.
तब मैं तुम्हें लकड़हारा वापिस कर दूंगा.”
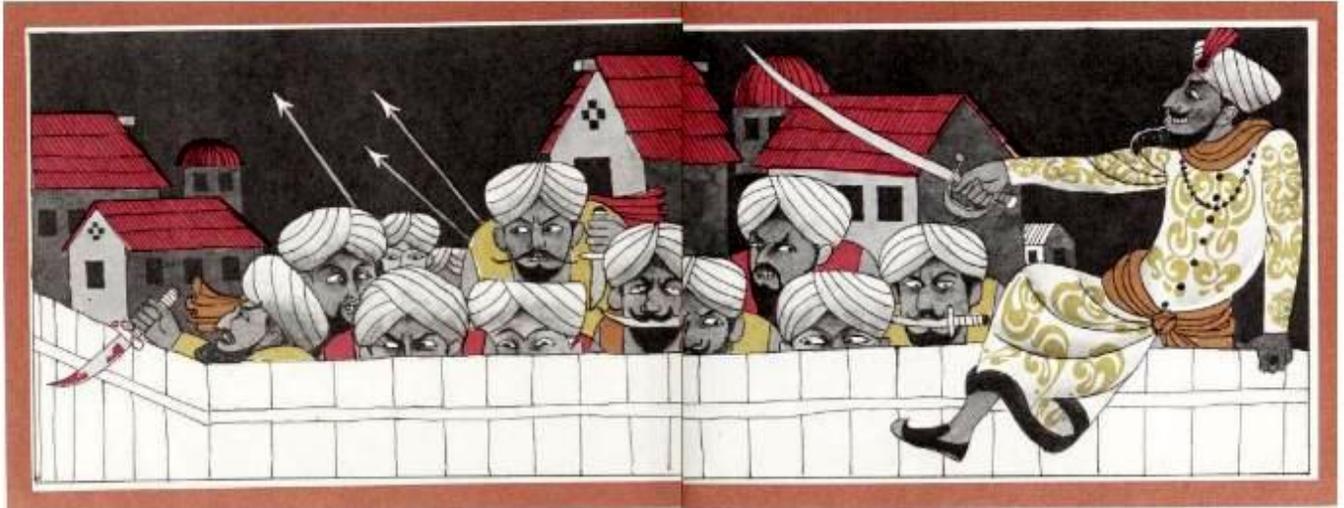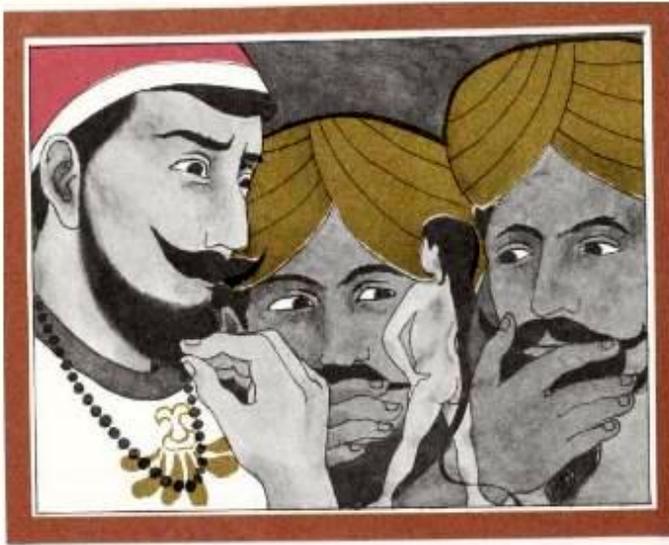
“तुम उतने सारे चोरों को
कैसे भगाओगे?”
छोटी ऊँगली ने कहा,
“मुझे महल की एक काली बिल्ली दें,
राजकुमार के रेशमीन कपड़े
और एक सुनहरी पगड़ी भी दें.
फिर आप देखें मैं क्या करता हूँ.”
राजा ने उसकी बात मान ली.

छोटी ऊँगली ने कहा,
“मैं चोरों के राजा और उसके
सारे चोरों को मार भगाऊँगा.
फिर मैं खुद राजकुमारी से
शादी करूंगा.”
राजा ने छोटी ऊँगली को
बहुत घूर कर देखा.

फिर रात के अँधेरे में
छोटी ऊँगली ने महंगे कपड़े पहने.
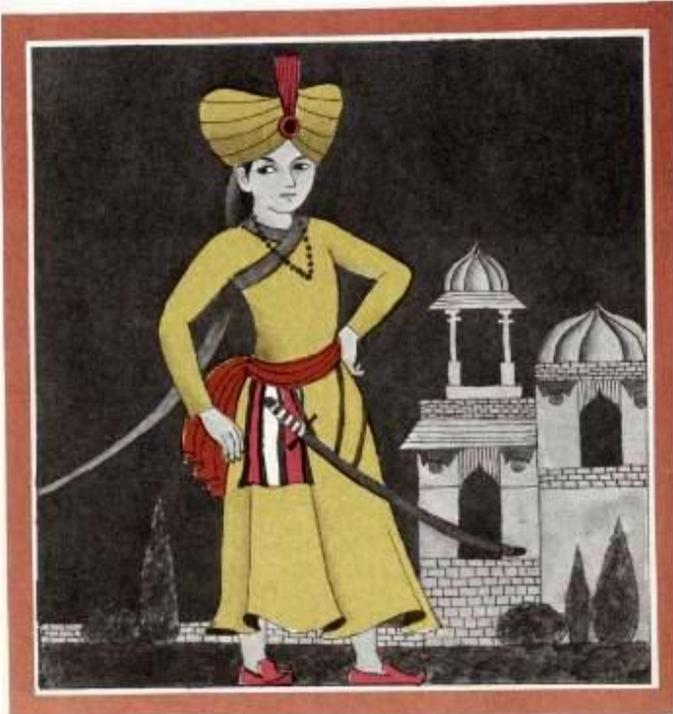
उसने डंडी और लौकी की तुम्बी ली
और फिर वो महल की
काली बिल्ली के सवार हुआ.
फिर वो बिना कुछ आवाज़ किए
चोरों के गाँव में गया.

वो चुपचाप चोरों के राजा के महल में गया. वहां बिल्ली रसोईघर में गई और वहां जो कुछ भी खाना था वो सारा बिल्ली खा गई.

फिर महल में खाने को कुछ नहीं बचा. चोरों के राजा को बहुत भूख लगी. उसने सभी चोरों को महल में काली बिल्ली को पकड़ने के लिए बुलाया.

उन दस हज़ार बर्रों ने
उन सभी चोरों को अपने डंक मारे.
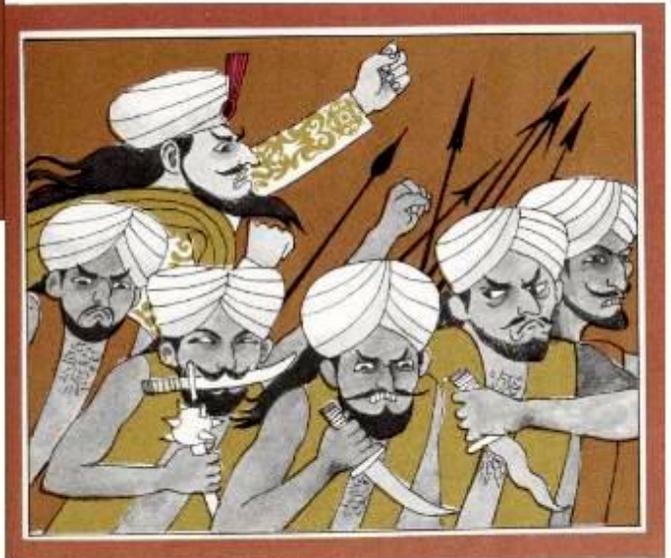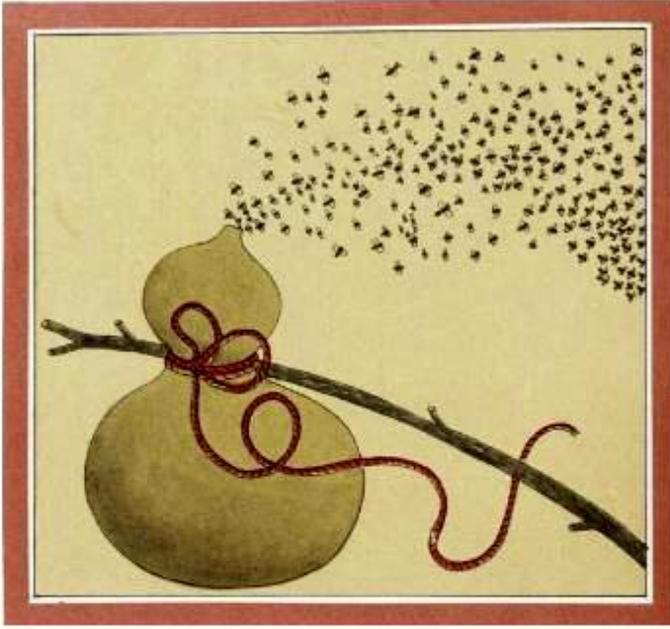
छोटी ऊँगली ने
डंडी और लौकी को
अपने हाथ में उठाया.
उस लौकी में से
दस हज़ार बर्रें बाहर निकलीं.

राजा और उसके चोर
चीखे-चिल्लाए, दर्द से कराहे.

वे वहां से दौड़े और भागे.
फिर वे कभी वापिस नहीं आए.

फिर छोटी ऊँगली राजा के पास वापिस आया. राजा ने उसे लकड़हारा वापिस कर दिया.
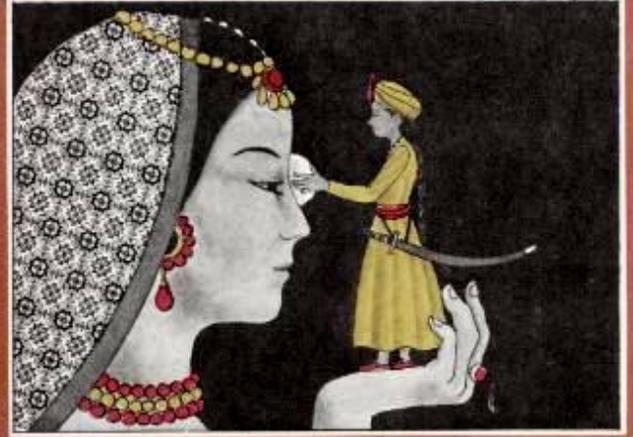
छोटी ऊँगली ने आधी अंधी राजकुमारी की आँखों को मेंढक राजकुमारी की दी हुई जादुई गेंद से छुआ.
फिर जब राजकुमारी ने अपनी आँखें खोलीं तो उसकी आँखें तारों जैसी चमकने लगीं.

जब राजा ने शादी की
तैयारियां शुरू करवाईं
तब जंगल से एक बूढ़ी औरत आई
उसकी पीठ झुककर दोहरी थी.
वो एक लकड़ी के सहारे
चल रही थी ठुम्मक-ठुम.
उसने छोटी ऊँगली को
एक खीरा दिया और कहा,
“इसे पूरा खाओ, डंठल के साथ.”

जैसे ही उसने खाया वैसे ही छोटी उंगली,
छह फीट ऊंचा हो गया!

राजा ने एक बग्घी भेजी
लकड़हारे की पत्नी
मेंढक राजकुमार
मेंढक राजकुमारी
को लाने के लिए.
लोहार अपने साथ
लकड़हारे के लिए एक
सोने की कुल्हाड़ी भी लाया.
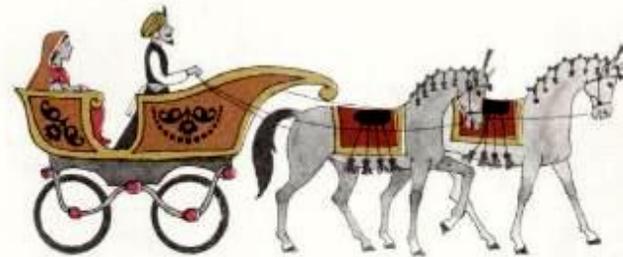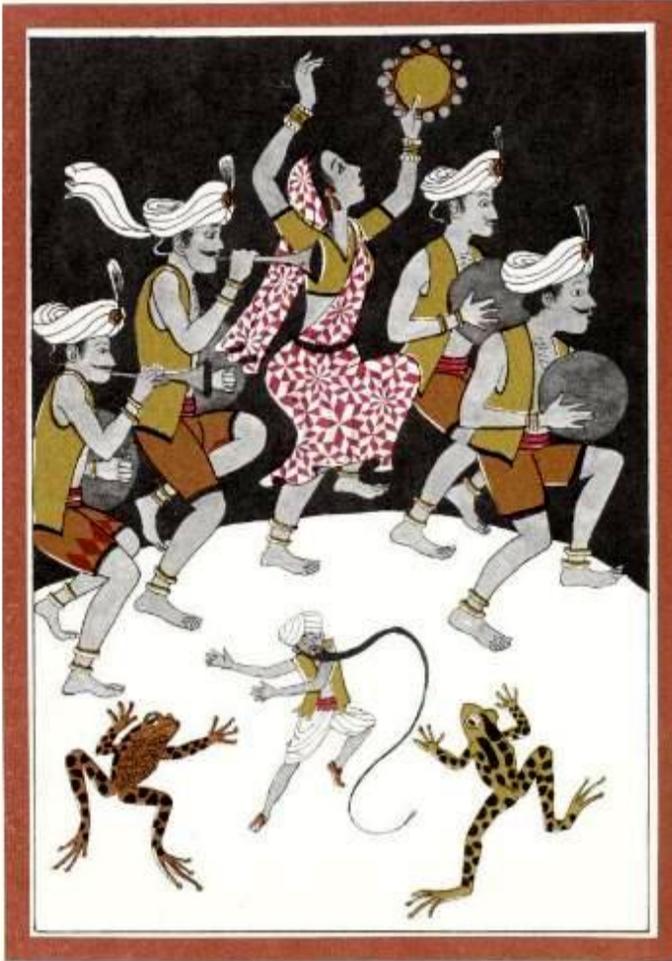
लोगों ने जश्न मनाया!

तोपे छोड़ी गईं!

ढोल बजे!

बांसुरी बजीं!

मेंढक राजकुमार कूदा,

मेंढक राजकुमारी नाची,

लोहार भी गोल-गोल नाचा

उसकी लम्बी दाढ़ी भी घूमी!

पूरी रात लोगों ने जश्न मनाया.
शादी की पार्टी चलती रही.
अगले दिन सुबह जंगल में से
बहुत ज़ोर की आवाज़ आई
लकड़हारा अपनी नई
कुल्हाड़ी से पेड़ काट रहा था...

....कट- कट- कट- कट!

अंत